

ग्रीष्म अयनांत: 21 जून

प्रलिम्स के लिये:

ग्रीष्म अयनांत, शीत अयनांत, वषुव ।

मेन्स के लिये:

ग्रीष्म अयनांत, अयनांत के पीछे का भूगोल, भौतिक भूगोल, महत्त्वपूर्ण भू-भौतिकीय घटना ।

चर्चा में क्यों?

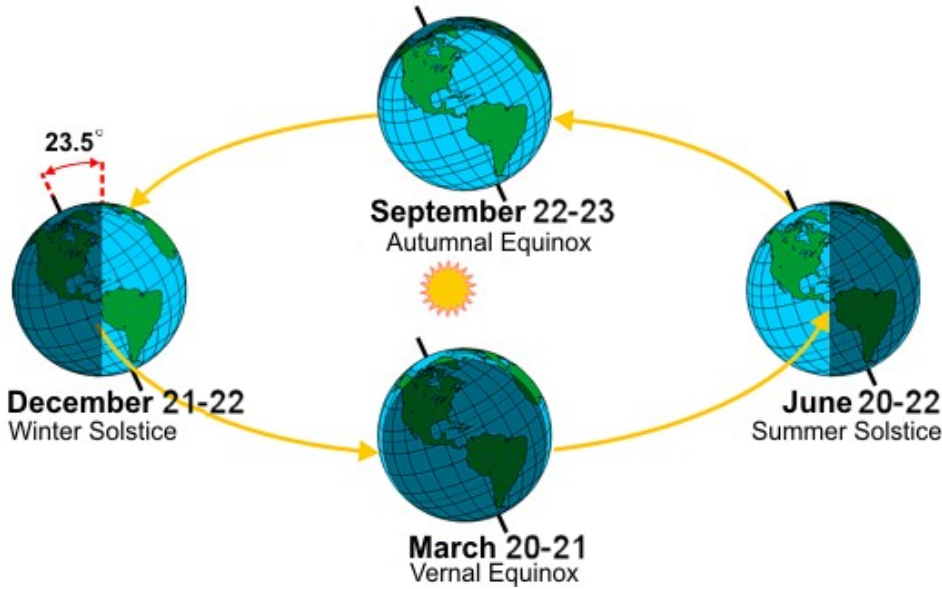
21 जून उत्तरी गोलार्ध में ग्रीष्म अयनांत का दिन है ।

- इस दिन को [अंतरराष्ट्रीय योग दिवस](#) के रूप में मनाया जाता है ।

ग्रीष्म अयनांत

परिचय:

- अयनांत एक लैटिन शब्द है जिसका अर्थ है “Stalled Sun” यानी “ठहरा हुआ सूर्य” । यह एक प्राकृतिक घटना है जो पृथ्वी के प्रत्येक गोलार्ध में वर्ष में दो बार होती है, एक बार ग्रीष्म ऋतु में और एक बार शीत ऋतु में । जैसा क्रमशः ग्रीष्म अयनांत और [शीत अयनांत](#) कहते हैं ।
- यह उत्तरी गोलार्ध में वर्ष का सबसे लंबा दिन और सबसे छोटी रात होती है ।
- इस दौरान उत्तरी गोलार्ध के देश सूर्य के सबसे नजिक होते हैं और सूर्य कर्क रेखा (23.5° उत्तर) पर ऊपर की ओर चमकता है ।
 - 23.5° के अक्षांशों पर कर्क और मकर रेखाएँ भूमध्य रेखा के उत्तर और दक्षिण में स्थित हैं ।
 - 66.5° पर उत्तर और दक्षिण में आर्कटिक और अंटार्कटिक वृत्त हैं ।
 - अक्षांश भूमध्य रेखा से किसी स्थान की दूरी का माप है ।
- संक्रांतिके दौरान पृथ्वी की धुरी जिसके चारों ओर ग्रह एक चक्कर पूरा करता है । इस तरह झुका हुआ है कि उत्तरी ध्रुव सूर्य की ओर झुका हुआ है और दक्षिणी ध्रुव इससे दूर स्थित है ।
- आमतौर पर, यह काल्पनिक धुरी ऊपर से नीचे तक पृथ्वी के मध्य से होकर गुजरती है और हमेशा सूर्य के संबंध में 23.5° झुकी होती है ।



■ ऊर्जा की अधिक मात्रा:

- सूर्य से प्राप्त ऊर्जा की अधिक मात्रा इस दिन की विशेषता है। NASA (नेशनल एरोनॉटिक्स एंड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन) के अनुसार, इस दिन पृथ्वी को सूर्य से प्राप्त होने वाली ऊर्जा की मात्रा उत्तरी ध्रुव पर भूमध्य रेखा की तुलना में 30% अधिक है।
- इस दौरान उत्तरी गोलार्ध द्वारा प्राप्त सूर्य के प्रकाश की अधिकतम मात्रा आमतौर पर 20, 21 या 22 जून को होती है। इसके विपरीत, दक्षिणी गोलार्ध में सबसे अधिक सूर्य का प्रकाश 21, 22 या 23 दिसंबर को प्राप्त होता है, जब उत्तरी गोलार्ध में सबसे लंबी रातें होती हैं।

संक्रांति के पीछे का भूगोल :

- इसके पीछे पृथ्वी के झुकाव के कारण दिनों की बदलती लंबाई है।
- पृथ्वी का घूर्णन अक्ष अपने कक्षीय तल से 23.5° के कोण पर झुका हुआ है। यह झुकाव, पृथ्वी की परिक्रमा और कक्षा जैसे कारकों के साथ, सूर्य के प्रकाश की अवधि में भिन्नता की ओर जाता है, जिसके कारण ग्रह पर किसी भी स्थान को अलग-अलग दिनों की अवधि प्राप्त होती है।
 - उत्तरी गोलार्ध सूर्य की दिशा में झुका हुआ आधा वर्ष बताता है, लंबे गर्मी के दिनों में सीधी धूप प्राप्त करता है। वर्ष के दूसरे भाग के दौरान, यह सूर्य से दूर झुक जाता है, और दिन छोटे होते हैं।
- झुकाव पृथ्वी पर विभिन्न मौसमों के लिये भी ज़िम्मेदार है। इस घटना के कारण सूर्य की गति उत्तरी से दक्षिणी गोलार्ध की ओर होती है और इसके विपरीत यह वर्ष में मौसमी परिवर्तन लाता है।

वर्ष:

- वर्ष में दो बार वर्षा ("बराबर दिन/रातें") के दौरान पृथ्वी की धुरी हमारे सूर्य की ओर नहीं होती है, बल्कि आने वाली करिणों के लंबवत होती है।
- इसका परिणाम सभी अक्षांशों पर "लगभग" समान अवधि की दिन और रात होती है।
- वसंत वर्षा (Spring Equinox) उत्तरी गोलार्ध में 20 या 21 मार्च को होता है। 22 या 23 सितंबर को उत्तरी गोलार्ध में शरद ऋतु या पतझड़ वर्षा होता है।

संघ लोक सेवा आयोग सविलि सेवा, पछिले वर्षों के प्रश्न (पीवाईक्यू)

प्रश्न: 21 जून को सूर्य की स्थिति होती है: (2019)

- आर्कटिक वृत्त में कक्षतिजि के नीचे नहीं होता है।
- अंटार्कटिक वृत्त में कक्षतिजि के नीचे नहीं होता है।
- भूमध्य रेखा पर दोपहर में लंबवत रूप से ऊपर की ओर चमकता है।
- मकर रेखा पर लंबवत रूप से ऊपर की ओर चमकता है।

उत्तर: (a)

- 21 जून को 'ग्रीष्म संक्रांति' के दौरान, उत्तरी गोलार्ध वर्ष का सबसे लंबा दिन होता है, जबकि दक्षिणी गोलार्ध में सबसे छोटा दिन होता है। इस समय के दौरान, पृथ्वी का उत्तरी ध्रुव सूर्य की ओर अपने अधिकतम झुकाव पर होता है और सूर्य 23.5° उत्तरी अक्षांश पर, यानी कर्क रेखा के साथ सीधे ऊपर की ओर दिखाई देता है।

- जैसे ही आर्कटिक वृत्त उत्तरी गोलार्द्ध में पड़ता है, सूर्य ग्रीष्म संक्रांतिके दौरान क्षतिजि के नीचे नहीं होता है, क्योंकि यहाँ सूर्योदय और सूर्यास्त उत्तरी आकाश में एकाग्र होने लगते हैं। इसके विपरीत 22 दिसंबर को शीतकालीन संक्रांतिके दौरान अंटार्कटिक वृत्त में भी यही घटना होती है। **अतः विकल्प (A) सही है।**

स्रोत : द हिंदू

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/summer-solstice-21st-june-1>

